शीत

कप कपाते देह को मैंने रजाई से ढका
तभी घड़ी की ओर, मैंने देखा ,
सुबह की ८ बज गए हैं,
सूर्य के दर्शन अब तक दुर्लभ हैं।
आसमान कुहरे से घिरा है,
चारो तरफ़ अंधकार छाया है।
क्या? सर्दी का मौसम आया है!

हेमंत के जाने का , शीत के आने का,
ठंडी वायु ने यह पैगाम लाया है।
नेत्रों से निद्रा दूर नहीं भागती,
ह्रदय में गरम चाय की लालसा जागती,
क्या करे ? ठंड का मौसम आया है,
साथ अपने सुस्ती लाया है।

ईशानवी मुरारका
कक्षा ९ ए

नया साल

नव वर्ष की पूर्व संध्या पूरी दुनिया में मनाया जाने वाला, एक खुशी का त्योहार है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, यह एक नए साल की शुरुआत का प्रतीक है (जिसमें 12 महीने होते हैं और 1 जनवरी को नए साल के पहले दिन के रूप में गिना जाता है)।

दुनिया भर में लोग नए साल के संकल्प और तैयारियों के लिए एक महीने पहले से योजना बनाना शुरू कर देते हैं। यह, किसी भी अन्य त्योहार की तरह, जाति या संस्कृति की परवाह किए बगैर, दुनिया भर में कई लोगों के जीवन में खुशियाँ लाती है। नए साल की पूर्व संध्या सभी उम्र के लोगों द्वारा व्यापक रूप से मनाई और खोजी जाती है। लगभग सभी स्कूल और शैक्षणिक संस्थाओं में क्रिसमस की पूर्व संध्या से नए साल (1 जनवरी) तक शीतकालीन अवकाश की घोषणा की जाती है। क्योंकि नया साल, साल के पहले दिन को दर्शाता है, यह लोगों के जीवन में खुशियाँ लाने की प्रवृत्ति रखता है, क्योंकि यह पिछले वर्ष को पीछे छोड़ते हुए, एक नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है।

नया साल लोगों के लिए अपने सभी बुरे अनुभवों को पीछे छोड़कर, भविष्य में सकारात्मक कदम उठाने का समय है। हर कोई आने वाले नए साल में अपने और अपनों के सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करता है।

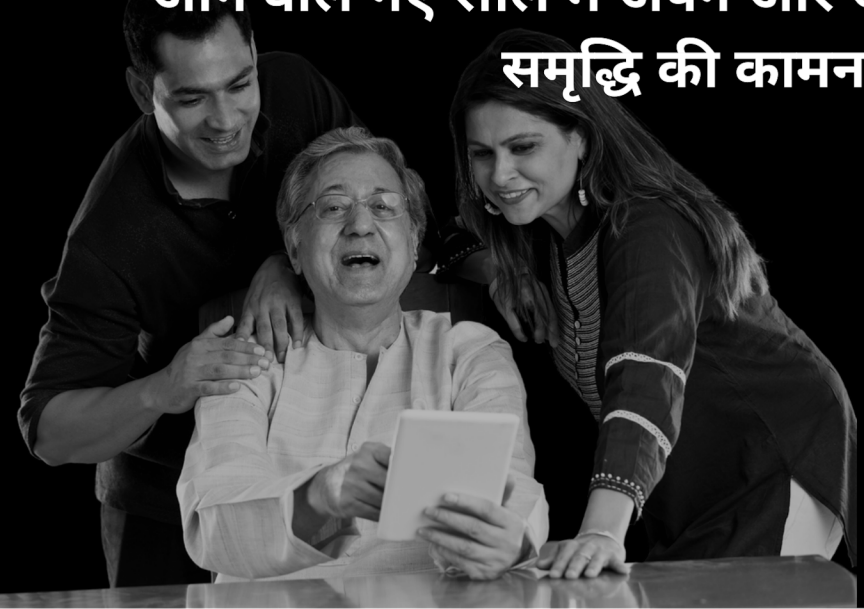

- ऋषिका डागा
कक्षा 11 ए

शीत ऋतु

बर्फ़ीली पवन मेरे बालों में,
सेब सी लाली मेरे गालों में,
सोई हुई चिड़ियाँ पेड़ों की डालों में,
सूरज की धूप तो रह गई ख़यालों में।

ठिठुरी रातों की गहराइयाँ,
गर्म कंबल में अंगड़ाइयाँ,
गाजर के हलवे पर लड़ाइयाँ,
यही तो हैं शीत ऋतु की परछाइयाँ॥

-अनुष्का साहा
९ - बी

शीत

वह क्षीथिल हो गई,
उस कोहरे के आवास में।
वह जीने ही लगी थी,
मर गई उस आस में,
कि कोई आकर सहारा देगा,
हाथ थाम, पार कराएगा नदी।
वह विश्वास लगाए बैठी थी,
उसी का गिरा रही, वह ठंडे पानी में अस्थि।

पैर जम गए थे, वह चल नहीं पा रही थी।
वह भगवान था या हैवान, जिसने उसकी नियति लिख डाली थी।
"मैं कहे देती हूँ, मेरे जीवन का भी कोई मोल है,
इस घने अब्दि में, मेरा भी पानी अनमोल है।
न जीने की कोई आशा, न राह का कोई मंज़र,
क्या तुम्हारे बेदिल सीने में, है कोई भावनाएँ।
मुझे जीवन के इस शीत में, क्यों छोड़ गए तुम?
तुम मेरी आत्मा हो, शरीर को क्यों छोड़ रहे हो तुम?

पर वह आत्मा न रुकी, चल पड़ी अपनी यात्रा पर,
उसके हृदय के कंपन को रोक, अपने पुनर्जन्म की दास्तान लिखने चला वह।
वह पड़ी रही क्षीथिल, जब तक लोगों ने उसे नहीं ढूंढा।
जीवन के शीत को न सह पाने के कारणवश,
वह न रख सकी, अपने प्राणों पर वश।

- रूद्राक्षी दास
कक्षा ११ एफ